B.Ed 1st Year
Session – 2019-2020/2021
Subject – ContemporaryIndia and Education
Course – C 2/Unit – 4 (d)
Topic – Role of a Teacher in Peace Education
Lecture No. - 20

Dr. Amod Kumar Sinha
Assistant Professor
Department of Education
A. N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

भूमिका

आज पुरी दुनिया में किसी न किसी रूप में अशांति व तनाव का वातावरण व्याप्त है। इसका सबसे बुरा प्रभाव युवा वर्ग के लोगों पर पड़ता है। इसका कारण उनका अतिसंवेदनशील होना है। उनकी उत्तेजना व संवेदनशीलता को सही मार्गदर्शन सही समय पर देना बहुत आवश्यक हो जाता है। प्रश्न यह है कि उन्हें कौन मार्गदर्शन दे। इस कार्य के लिए किसी शिक्षक से बेहतर विकल्प नहीं हो सकता है। कारण, शिक्षा वह माध्यम है जो किसी व्यक्ति को उसके बेहतर जीवन जीने के लिए समाज की भलाई में बदल देती है। यह मन व आत्मा को शुद्ध रखती है। यह किसी भी क्षेत्र में प्रदर्शन के लिए शक्ति एवं आवश्यकताएं जुटाने में मदद करती है। शिक्षा शिक्षकों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं में से एक है। हमारे राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे छात्रों को उनके अपने कौशल, अच्छी आदतें, व्यवहार सीखाने एवं एक अच्छा नागरिक बनने में मदद करते हैं। साथ ही दुनिया में शांति एवं सद्भाव के महत्व का अहसास कराते हैं।

शांति हेतु शिक्षकों के कर्तव्य एवं वांछित कौशल

शांति शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका को स्पष्ट करते हुए गाँधी जी ने कहा है -``बुनियादी शिक्षा में हमने जानबूझ कर नैतिक व धार्मिक शिक्षा को सम्मलित नहीं किया है। सभी धर्मों की शिक्षा समाज में जिस प्रकार दी जाती है, उसमें यह भय था कि वह राष्ट्रीय एकता के विविध समस्याओं का कारण न बन जाए। किन्तु मेरे विचार से सभी धर्मों में जो सामान्य सत्य हों, वे सभी छात्रों को बताए जाने चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम शिक्षकों को इन सत्यों को अपने जीवन में उतारना होगा। शिक्षक के आचरण का अनुकरण करके ही बच्चे सत्य एवं न्याय जैसे

जीवन मूल्यों को, जो सभी धर्मों का आधार हो, सीख सकेंगे। ये मूल्य पुस्तकों या शब्दों के माध्यम से नहीं सिखाए जा सकते हैं।''

आज के बालक व छात्रों को परिवार व समाज में सभी स्थानों पर मूल्यहीनता दिखायी देती है। परिवार के बड़े लोगों, जन-प्रतिनिधियों, व्यवसायिओं आदि में उसे आदर्श व्यक्ति नहीं दिखायी देता है । ऐसे में शांति शिक्षा के लिए किसी शिक्षक में निम्नलिखित कौशलों या योग्यताओं का होना आवश्यक हैः-

1. **धर्म का ज्ञान** – धर्म से तात्पर्य किसी विशेष प्रचलित धर्म या सम्प्रदाय से नही।धर्म का अर्थ है- धारणीय। वे विचार या मूल्य जिनके धारण करने से मनुष्य का सम्यक विका्स हो, अच्छा आचरण हो, और वह आदर्श जीवन जीने के लिए उन्मुख हो। शिक्षकों द्वारा ईन मूल्यों का प्रस्तूतिकरण बालकों को भी उस मार्ग पर चलने के लिए उन्हें प्रेरित करेगा।

2. **आत्मगौरव** - शिक्षक में आत्मगौरव का होना अति आवश्यक है। बच्चे अपने शिक्षक को सर्वोपरि मानते हैं। अतः किसी शिक्षक का रहन-सहन, आचरण, व्यवहार आदि अनुकरणीय होना आवश्यक है। भारत एवं समूचे विश्व में"वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना फैलाने का भार शिक्षक पर ही है।

3. **प्रेरणास्रोत** – जिस तरह एक डॉक्टर मानव शरीर में आए विकारों का ईलाज कर उसे नया जीवन देता है, उसी तरह एक शिक्षक का कार्य भी शिक्षा में उत्पन्न विकृतियों का पता लगाकर उसे पुनः प्राणवान बनाना है। किसी ने ठीक ही कहा है, *"औसत दर्जे का शिक्षक बताता है, अच्छा शिक्षक समझाता है, उससे भी अच्छा शिक्षक प्रदर्शित करता है, और अलौकिक शिक्षक प्रेरित करता है।"*

कुल मिलकर यह कहा जा सकता है कि यदि पढ़ाते समय यदि अध्यापक रूचिपूर्ण अध्यापन पद्धति का उपयोग करें एवं साथ ही प्रत्यक्ष स्वयं के व्यवहार के द्वारा भी शांति को विद्यार्थियों को अवगत करायेंगे तो आसानी से शांति कद स्कूल व विद्यार्थियों में स्थापित किया जा सकता है। वह अपने व्यवहार, अध्यापन, प्रत्यक्ष कार्य व अध्यापन की शांतप्रिय पद्धति को अपनाकर स्कूल में सामंजस्य का निर्माण कर सकते हैं। विद्यार्थियों में मूलतः अनुकरण करने की स्वभाविक प्रवृति होती है। अतः वे अपने शिक्षकों का अनुकरण करते हुए शांतिप्रिय बन जाते हैं।

समाप्त